



रेनी: इस्लामी धर्म (इस्थ)

अध्याय-7 रंजीत एस.

घ: मध्यला जीना, भारतीयों



और अंग्रेजों से जुड़ा हुआ

क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1-15 शब्दों में दीजिए -

1. महाराजा रणजीत घा का जन्म कब हुआ था? उस देश का नाम क्या है?

उत्तर: महाराजा रणजीत सिंह का जन्म 13 नवम्बर 1780 ई. को शुक्रचिकिया गांव निवासी महासिंह के घर हुआ था।

हो गया।

2. मशताब कौर कौन हैं?

उत्तर: महाराजा रणजीत सिंह की पत्नी।

3. 'सती कादी' का समय काल 1792 से 1797 ई. तक है जब कैसा है?

महाराजा रणजीत सिंह नाबालिग थे, राज कौर सुकरचिकिया सामल की राज्यपाल थीं,

दीवान लखपत राय और कौर के हाथों में था। कवि को 'सतिक्कड़ी दी रपर ती' के नाम से जाना जाता है।

4. लाहौर के नागरिक उत्तर-पूर्वी क्षेत्र से महाराजा रणजीत के देश में आये थे जी एलाहौर पर आक्रमण करने का अधिकार सेना को किसने दिया?

।

5. भिंड के युद्ध में महाराजा रणजीत सिंह "घ" शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर- जिले सिंह रामगढ़िया, गुलाब सिंह भीगी, असाहब सिंह भीगी 6. महाराजा रणजीत सिंह ने अमृतसर , जोध सिंह और संजय मोंडिन।

और लोहगढ़ पर शासन किया उत्तर- जैसे-जैसे अमृतसर सिखों की धार्मिक राजधानी बना दुश्मन ने हमला क्यों किया?

और लोहगढ़ ने अपना सैन्य महत्व प्राप्त किया।

7. स्टार एस शहर का नाम क्या है?

उत्तर: दिल्लेवालिया सामल से हैं।

क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-50 शब्दों में दीजिए -

1. महाराजा रणजीत बच्चों की कहानी के बारे में पूछें।

उत्तर - महाराजा रणजीत सिंह अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। बचपन में उन्हें बहुत लाड़-प्यार और लाड़-प्यार मिला। जब वे पाँच वर्ष के हुए, तो शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुजरांवाला में भाई भाग

सिंह की धर्मशाला में गए। लेकिन उन्होंने अन्य शासकों के पुत्रों की तरह शिक्षा में कोई रुचि नहीं ली। इसीलिए वे अनपढ़ ही रहे। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन शतरंज खेलने और तलवारबाजी सीखने

में बिताया। इसीलिए वे बचपन में ही एक कुशल घुड़सवार, तलवारबाज और तीरंदाज बन गए। बचपन में ही रणजीत सिंह को चेचक ने बुरी तरह जकड़ लिया था। इस बार उनके बचने की कोई उम्मीद

नहीं थी। सौभाग्य से, रणजीत सिंह कुछ दिनों बाद ठीक हो गए। लेकिन चेचक के निशान उनके चेहरे पर रह गए। चेचक के कारण उनकी बाईं आँख भी खराब होती चली गई। , घोड़े की बारी

2. महाराजा रणजीत देबचिन की वीरतापूर्ण घटनाओं का वर्णन करें।

उत्तर - महाराजा रणजीत सिंह बचपन में ही एक वीर योद्धा बन गए थे। जब वे बच्चे थे, तब उन्होंने होदरा के युद्ध में अपने पिता की मदद की थी। उन्होंने न केवल इस युद्ध में अपने पिता की मदद की, बल्कि जब उनके पिता बीमार पड़े, तो उन्होंने सुकरचिकिया की सेना का नेतृत्व भी किया। उन्होंने न केवल दुश्मन सेना को हराया, बल्कि उसका गोला-बारूद भी लूट लिया। एक बार, रणजीत सिंह का अंतिम संस्कार करने के बाद, महा सिंह अकेले घोड़े पर लौट रहे थे। सरहाई सिकचिथा जनजाति के प्रमुख हसमत खान ने उन्हें देख लिया। हसमत खान उन्हें हरा नहीं सका। बदला लेने के लिए, हसमत खान रणजीत सिंह को मारने के लिए एक झाड़ी में छिप गया। जब रणजीत सिंह झाड़ी से शिवलिंग के पास पहुंचे, तो हसमत खान ने उन पर हमला कर दिया। रणजीत सिंह ने उनके हमले को रोक दिया और दुश्मन पर इतनी उसका सिर उसके शरीर से अलग हो गया। जोर से हमला किया कि

3. महाराजा रणजीत एस लाहौर पर कब्जे की स्थिति.

उत्तरी लाहौर की जनता भीगी हमलावरों से तंग आ चुकी थी। उन्हें यह भी पता चला कि कड़ा का शासक संजामुद्दीन भी लाहौर पर कब्ज़ा करना चाहता था। इस समय तक, महाराजा रणजीत सिंह अपनी बहादुरी और बुद्धिमत्ता के लिए काफ़ी प्रसिद्ध हो चुके थे। इसलिए, लाहौर के प्रमुख नागरिकों ने अपने पिताओं का वेश धारण कर लाहौर पर कब्ज़ा करने की योजना बनाई। इस साजिश में भीगी मुसलमान भी शामिल थे। रणजीत सिंह ने हमलावरों की अक्षमता और उनके द्वारा जनता पर किए गए अत्याचारों का वर्णन किया। साजिश में , सिख और

महाराजा रणजीत सिंह से लाहौर पर कब्ज़ा करके उसे अत्याचारी शासकों से मुक्त कराने का अनुरोध किया गया। साधारणियों ने उन्हें यह वचन भी दिया कि जब वे लाहौर पर आक्रमण करेंगे, तो वे लाहौर के किले का द्वार खोल देंगे। लाहौर के साधारणियों से समर्थन का वचन पाकर रणजीत सिंह ने अपनी सेना के साथ कौर सेना तैयार की। रणजीत सिंह और कौर की सेनाएँ लाहौर में प्रवेश कर गईं।

किया। जब वह अपनी सेना के साथ लाहौर गेट पर पहुँचा, तो साधारणियों ने तलवारों से गेट खोल दिया। जब महाराजा रणजीत सिंह की सेना शहर में दाखिल हुई, तो भीगी राडार भयभीत हो गया। साहब सिंह और मोहर सिंह शहर छोड़कर भाग गए। चेत सिंह ने खुद को पानी की टंकी में बंद कर लिया। पानी की टंकी पानी से भर गई।

प्रबंध न कर पाने के कारण उन्होंने अगले दिन आत्मसमर्पण कर दिया। 4. सम्राट की विजय का महत्व समझें।

उत्तर -1. लाहौर विजय के बाद, महाराजा रणजीत सिंह की सबसे महत्वपूर्ण विजय अमृतसर की विजय थी। जहाँ लाहौर पंजाब की राजधानी थी, वहीं अमृतसर अब सिखों की धार्मिक राजधानी बन गया। 2. अमृतसर विजय के साथ ही महाराजा रणजीत सिंह की सैन्य शक्ति में वृद्धि हुई। लोहगढ़ का किला उनके लिए बहुत मूल्यवान हो गया।

तांबे और पीतल से बनी एक बहुत बड़ी तोप भी प्राप्त हुई। 3. उन्होंने प्रसिद्ध सैनिक अकाली फला सिंह की सेवाएँ प्राप्त कीं।

4. महाराजा रणजीत सिंह 5. सिंहों के असाधारण

साहस और बहादुरी के कारण, महाराजा रणजीत सिंह ने कई शानदार जीत हासिल कीं।

6. अमृतसर की विजय के परिणामस्वरूप महाराजा रणजीत सिंह की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

7. भारत में ब्रिटिश राज से कई भारतीय उनके राज्य में काम करने के लिए आने लगे। साहिंदु तानी,

ईस्ट इंडिया कंपनी छोड़ने वाले मुस्लिम और यूरोपीय सैनिक महाराजा रणजीत सिंह की सेना में शामिल होने लगे।

5.महाराजा रणजीत एस जी ने समित्रा द्वीप समूह पर कब और कैसे नियंत्रण किया?

उत्तर:-रणजीत सिंह ने सत्ता में आते ही कमज़ोर रियासतों से लोहा लेना उचित नहीं समझा। उसने मज़बूत रियासतों से दोस्ती की और अच्छा मौका देखकर नीचे बताए गए कमज़ोर रियासतों की ज़मीनों पर कब्ज़ा कर लिया।

साला-

1. कन्हैया सामल - कन्हैया सामल महाराजा रणजीत सिंह के हुस्सरो का निवास स्थान था। उनके शासनकाल में, उनकी पत्नी दा कौर ने उनकी शक्ति बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किया। महाराजा रणजीत सिंह ने 1811 और 1813 ई. के बीच कन्हैया सामल के हाजीपुर, मुकेरियां, बटाला असद क्षेत्रों को भी अपने राज्य में मिला लिया और दा कौर को कैद कर लिया गया और जेल से रिहा कर दिया गया।

2. रामगढ़िया सामल - जब जोध सिंह ने रामगढ़िया पर विजय प्राप्त की, तो महाराजा रणजीत सिंह ने उनके साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखे। 1815 ई. में जब जोध सिंह की मृत्यु हो गई, तो महाराजा ने उनकी प्रजा को अपने राज्य में मिला लिया।

3. अहलवालिया सामल- फतह सिंह अहलवालिया ने महाराजा रणजीत सिंह की विजयों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1825-1826 ई. में उनके संबंध तनावपूर्ण हो गए। परिणामस्वरूप, महाराजा रणजीत सिंह ने तलुज के उत्तर-पश्चिम में स्थित अहलवालिया सामल के क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया।

6. टेस्सलोनियों द्वारा मुल्तान पर विजय।

उत्तर-1. मुल्तान की विजय से महाराजा रणजीत सिंह की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। 2. इससे पंजाब में अफगानों की शक्ति काफी कम हो गई। 3.

बहावलपुर के डेरा जाति और दाऊद पुत्र भी महाराजा के अधीन हो गए।

4. आर्थिक दृष्टि से भी यह विजय महाराजा रणजीत सिंह के लिए लाभदायक सिद्ध हुई, उनका व्यापार बढ़ा। 5. इस विजय से महाराजा रणजीत सिंह का और अधिक क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने का उत्साह बढ़ गया।

7. अटक के युद्ध का वर्णन कीजिए।

उत्तर -1813 ई. जब काबुल के वजीर फसीत खां और महाराजा रणजीत सिंह ने एक साथ कश्मीर पर आक्रमण किया तो विवाद उत्पन्न हो गया। कश्मीर विजय के बाद फसीत खां ने मुल्तान विजय और अटक विजय में महाराजा

रणजीत सिंह की सहायता की। लेकिन वह ऐसा कश्मीर विजय के बाद ही करेगा। महाराजा रणजीत सिंह ने फसीत खां के स्थान पर फसीत खां को नियुक्त किया। फसीत खां के बाद फसीत खां ने सिंधी की शर्तें पूरी नहीं कीं। इसलिए

पहले, उन्होंने अपने गृह मंत्री फकीर अजीजुद्दीन का वेश बदलकर अटक के शासक जहांदार खां से बात की। महाराजा रणजीत सिंह ने फसीत खां को दण्डित करने के लिए अटक पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। उससे

जहांदार खां अटक का किला महाराजा रणजीत सिंह को सौंपने को तैयार हो गया। महाराजा रणजीत सिंह ने उसे बदले में एक लाख रुपये वार्षिक आय वाली जागीर प्रदान की। फसीत खां अटक के किले पर महाराजा

रणजीत सिंह का कब्ज़ा बर्दाश्त नहीं कर सका और महाराजा रणजीत सिंह ने भी तैयारी कर ली।

वह ऐसा करने में सफल रहे। उन्होंने अटक में खासल सेना के साथ युद्ध किया। उसके बाद, जोध सिंह रामगढ़िया, हरि सिंह नलवा और

मोहकम छिंद की सेना ने अटक में युद्ध किया। 26 जनवरी ई. को हैदरो नामक स्थान पर भीषण युद्ध हुआ। यह

इसे 'छछ का युद्ध' भी कहा जाता है। पहली अफ़ग़ान विजय महाराजा की सेना को मिली थी। इस युद्ध

महाराजा शेष अफ़ग़ान विजयों से प्रसन्न हुए। के परिणामस्वरूप, महाराजा रणजीत सिंह का अटक पराजित हुआ, लेकिन उनकी शक्ति मज़बूती से स्थापित हो गई। उनकी शक्ति का साया भी कम हो गया। इस विजय से

महत्वपूर्ण विदेशी देश

8.एस दिशा के बारे में पूछें.

पंजाब के पश्चिम में स्थित उत्तर-सिंध, सिंध नदी के दोनों किनारों पर विजय प्राप्त करने के बाद, महाराजा रणजीत सिंह ने 1830-31 यह सिंध के आसपास स्थित एक महत्वपूर्ण विदेशी देश है।

ई. में सिंध पर विजय प्राप्त करने का निश्चय किया। महाराजा रणजीत सिंह को रोकने के लिए आसपास के देशों के भारत के गवर्नर जनरल रोपड़ में उनसे मिले, जिन्होंने कर्नल पोस्टिंगर को सिंध के सरदारों के साथ व्यापार करने के लिए भेजा।

26 अक्टूबर, 1831 ई. को स्विच ऑफ कर दिया गया। यात्रा अध्ययन के लिए भेजी गई।

जब महाराजा रणजीत सिंह को पता चला कि अंग्रेज़ सिंध के अमीरों के साथ व्यापार कर रहे हैं,

जब उसे बताया गया कि उसने समझौता कर लिया है तो वह बहुत दुखी हुआ। 9. "संस्कार" शब्द

का क्या अर्थ है?

उत्तरी सिंध पर सात सरदारों का संयुक्त अधिकार। 1834 ई. में, महाराजा रणजीत सिंह ने सस्करपुर के मजारी कबीले के विरुद्ध एक सेना भेजी क्योंकि वे सिख भूमि को लूट रहे थे। 1836 ई. में, महाराजा रणजीत सिंह ने सफर के राजकुमार

खड़क सिंह के नेतृत्व में मजारी कबीलों के विरुद्ध एक सेना भेजी क्योंकि वे अभी भी सिख भूमि को लूट रहे थे। सिख सेना ने मजारी क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया। जब

महाराजा रणजीत सिंह अपनी शर्तें पूरी करने के लिए खड़क सिंह को पुनः वहां भेजना चाहते थे, इसलिए गवर्नर-

जनरल ऑकलैंड ने महाराजा को रोक दिया। इस प्रकार महाराजा न तो सस्करपुर पर और न ही वरसाक पर कब्ज़ा कर सके। परिणामस्वरूप, महाराजा रणजीत सिंह और अंग्रेजों के बीच संबंध बिगड़ गए।

10.केसर का उद्देश्य क्या है?

उत्तर - तलुज और साबा के संगम के पास स्थित सफ़रोज़पुर एक अत्यंत महत्वपूर्ण शहर था। अंग्रेजों ने पहले ही चेतावनी दे दी थी कि वे महाराजा रणजीत सिंह को इस पर कब्ज़ा नहीं करने देंगे। जब भारत में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ,

तो मई, 1835 ई. में अंग्रेजों ने सफ़रोज़पुर पर अधिकार कर लिया।

सलाई। महाराजा रणजीत सिंह अंग्रेजों की इस कार्रवाई से स्तब्ध थे। उनके दरबारियों ने भी अंग्रेजों की इस कार्रवाई का खुलकर विरोध किया। 1838 ई.: अंग्रेजों ने सफोजापुर को छावनी बनाकर वहाँ अपनी सेना तैनात कर दी।

ग) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100-120 शब्दों में दीजिए:-

कृपया कॉल करें -

1.महाराजा रणजीत एस यदि आप कमज़ोर हैं, तो आप मजबूत कैसे नहीं हो सकते?

उत्तर: महाराजा रणजीत सिंह ने शक्तिशाली राज्यों के साथ गठबंधन किया और उनकी मदद से कमजोर राज्यों को हराया।

सामलान को दबा दिया गया।

1. दिल्लीवाल्या समाल पर अधिकार- दिल्लीवाल्या समाल के मालिक तारा सिंह घेबा हैं। चूंकि वे एक सुंदर महिला थीं

महाराजा रणजीत सिंह ने इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त नहीं की। 1807 ई. में उनकी मृत्यु के बाद ही महाराजा ने इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की।

रणजीत सिंह ने राहों पर आक्रमण किया। तारा सिंह घेबा की भाभी ने महाराजा रणजीत सिंह के विरुद्ध युद्ध लड़ा।

लेकिन वह हार गया। महाराजा रणजीत सिंह ने उधमपुर के भारतीयों को अपने राज्य में स्वीकार कर लिया।

2. क्रॉस सिंधिया सामल पर कब्ज़ा -1809 ई. क्रॉस सिंधिया सामल के शासक बघेल सिंह की हत्या कर दी गई। उनकी मृत्यु की सूचना मिलने पर, महाराजा रणजीत सिंह ने अपनी सेना क्रॉस सिंधिया सामल क्षेत्र में भेज दी। बघेल सिंह की

पत्नियों (राम कौर और राज कौर) ने महाराजा रणजीत सिंह की सेना का ज़्यादा प्रतिरोध नहीं किया। बदले में, सामल के नए शहर रुड़की को महाराजा रणजीत सिंह के शासन में मिला लिया गया।

3. निक्की सामल पर कब्ज़ा -1807 ई. स्थिच महाराजा की रानी राज कौर के भतीजे खान सिंह ने निक्की सामल पर कब्ज़ा कर लिया।

राष्टार स्थापित हो चुका था। महाराजा ने कई बार वेश बदलकर अपने राज्य में प्रकट होने का प्रयास किया। लेकिन 1810 ई. में महाराजा रणजीत सिंह के आदेशों का पालन करते हुए उनका शासन समाप्त हो गया। उन्होंने अंत्यन के नेतृत्व में एक सेना उनके पास भेजी। मोहकम छिंद ने शीघ्र ही उधमपुर जिले के कोट

कमा लिया, सरकपुर और असद इलासका जैसे नए शहरों पर अधिकार कर लिया। काहन सिंह की वार्षिक आय 20,000 रुपये थी।

संपत्ति प्रदान की गई।

4. फैजलपुरिया क्षेत्र पर कब्ज़ा - 1811 ई. महाराजा रणजीत सिंह ने फैजलपुरिया क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया।

बुद्ध सिंहों को उनकी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ा। उनके इनकार करने पर, महाराजा रणजीत सिंह ने मोहकम छिंद के नेतृत्व में अपनी सेना भेजी। अहलवा लिया के फतह सिंह और रामगढ़िया के जोध सिंह ने उनका साथ दिया। बुद्ध सिंह महाराजा रणजीत सिंह की सेना का सामना नहीं कर सके और

डूबकर बच निकले। परिणामस्वरूप, महाराजा रणजीत सिंह ने उस्मान के जलंधर, बेशरमपुर और पिथी असद पर अधिकार कर लिया।

2.महाराजा रणजीत एस 19वीं शताब्दी में मुल्तान की विजय की रणनीति का वर्णन करें।

उत्तर- मुल्तान विजय, 1818 ई. - मुल्तान का क्षेत्र आर्थिक और सैन्य दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। इसलिए महाराजा रणजीत सिंह ने सबसे पहले 1802 ई. में मुल्तान पर आक्रमण किया। वहाँ के शासक ने उन्हें पुरस्कार स्वरूप धन देकर वापस भेज दिया। जब मुल्तान के नवाब मुजफ्फर खान, महाराजा रणजीत सिंह से किए

वादे के अनुसार वापस नहीं लौटे, तो महाराजा रणजीत सिंह ने 1805 ई. में मुल्तान पर आक्रमण कर दिया। लेकिन मराठा सेनापति जैवंत राव होल्कर, जो अपनी सेना के साथ पंजाब आ गए थे, महाराजा रणजीत के पास वापस लौटने में कामयाब रहे। 1807 ई. में महाराजा रणजीत सिंह ने मुल्तान पर तीसरी बार आक्रमण

बीच समझौता करा दिया। 24 फरवरी 1810 को महाराजा की सेना ने मुल्तान के कुछ क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया। 25 फरवरी को सिख सेना मुल्तान के कुछ क्षेत्रों पर कब्ज़ा करने में कामयाब रही। लेकिन बहावलपुर के नवाब बहावल खान ने हस्तक्षेप किया और महाराजा रणजीत सिंह और नवाब मुजफ्फर खान के

को सिखों ने मुल्तान के किले पर भी घेरा डाल दिया। लेकिन महाराजा रणजीत सिंह की सिख सेना और मोहकम छिंद की हार के कारण, महाराजा रणजीत सिंह किले की घेराबंदी तोड़ने में सफल रहे। 1816 में महाराजा रणजीत सिंह ने अकाली फला सिंह को मुल्तान और बहावलपुर के शासकों से कर वसूलने के लिए अपनी

सेना में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने मुल्तान के बाहर के कुछ कस्बों पर कब्ज़ा कर लिया। मुल्तान के नवाब ने फला सिंह के साथ शीघ्र ही शांति स्थापित कर ली। 1817 ई. स्वच्छ भवानी

कोई सफलता नहीं मिली। जनवरी 1818 में, 20,000 सैनिकों ने मुल्तान पर हमला किया। उनका नेतृत्व दीवान छिंद कर रहे थे। नवाब मुजफ्फर खान 2,000 सैनिकों के साथ स्कूल के अंदर घुस गए।

सिख सेना ने सहार पर कब्ज़ा कर लिया और शहर को अपने नियंत्रण में ले लिया। घेराबंदी तोड़ दी गई। अंततः सिख अपने सहयोगियों के साथ शहर में घुस गए और 1818 ई. में सिखों ने मुल्तान पर विजय प्राप्त की। मुल्तान का सामान्य प्रशासन उखसदयाल को सौंपा गया। सैन्य प्रशासन बाज

सिंह को सौंपा गया। खुशाल सिंह ने मुल्तान के पुलिस प्रमुख का पद संभाला। दीवान सावन मिल को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त किया गया। मुल्तान की विजय ने महाराजा रणजीत सिंह की प्रतिष्ठा को बढ़ाया। पंजाब में अफगानों की शक्ति बहुत कम हो गई। डेरा जाति और बहावलपुर के दाऊद पुत्र भी महाराजा के अधीन हो

गए। आर्थिक दृष्टि से भी यह विजय महाराजा रणजीत सिंह के लिए लाभदायक सिद्ध हुई, उनका व्यापार बढ़ गया। इस विजय के साथ ही महाराजारणजीत सिंह ने अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने का निर्णय लिया।

उत्साह बढ़ता गया।

3.महाराजा रणजीत एस	कश्मीर पर विजय की योजना बनाओ।
उत्तरी कश्मीर की विजय 5 जुलाई, 1819 ई. - कश्मीर घाटी अपनी सुंदरता के कारण 'उत्सव की घाटी' के रूप में प्रसिद्ध हो गई। महाराजा रणजीत सिंह कश्मीर की सुंदर घाटी को जीतने के लिए बहुत उत्सुक थे। 1811-12 ई. में उन्होंने कश्मीर में स्थित सांभर और राजौरी जिलों पर कब्जा कर लिया। अब महाराजा रणजीत सिंह आगे बढ़कर कश्मीर घाटी पर कब्जा करना चाहते थे। उसी समय, काबुल के वज़ीर फ़तह खां बकरजई ने भी कश्मीर पर कब्जा करने की योजना बनाई। 1813 ई. में फ़तह खां और	
रणजीत सिंह एक समझौता कराने में सफल रहे, जिससे दोनों पक्षों की सेनाएं एक साथ कश्मीर पर हमला कर सकें।	
कश्मीर विजय के बाद, काबुल के वज़ीर, फ़तह खान ने मुल्तान विजय में महाराजा रणजीत सिंह का समर्थन किया।	
महाराजा रणजीत सिंह अटक की विजय में फ़तह खान का साथ देंगे। महाराजा रणजीत सिंह को विजित भूमि और लूटे गए माल का एक तिहाई हिस्सा भी मिलेगा। समझौते के बाद, महाराजा रणजीत सिंह ने मोहकम छिंद के नेतृत्व में फ़तह खान को कश्मीर अभियान में सहयोग देने के लिए 12,000 सैनिक भेजे। लेकिन फ़तह खान ने चालाकी से सिख सेना से बचकर आगे बढ़कर कश्मीर घाटी में प्रवेश किया। कश्मीर का शासक अत्ता	
अभियान का सामना सेरगढ़ नामक स्थान पर शत्रुओं से हुआ। लेकिन फ़तह खाँ ने उसे सिखों की ओर से कोई सहायता नहीं दी। इस प्रकार फ़तह खाँ ने महाराजा रणजीत सिंह के साथ किया गया समझौता तोड़ दिया। उसने सिख सेना की कमान संभाली और कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। उसने कश्मीर के बेदार आजम को मार डाला। उसने	
फ़तेह खान का भाई। वह एक बहादुर और योग्य योद्धा था। जब राम सदल की सेना पीर पंचल दर्रे को पार करके कश्मीर घाटी में दाखिल हुई, तो असजम खान ने थकी हुई सिख सेना पर हमला कर दिया। लेकिन राम सदल ने बहादुरी से दुश्मन का मुकाबला किया। अंततः असजम और राम सदल एक समझौते पर पहुँच गए।	
समर दीवान छिंद 1819 ई.: महाराजा रणजीत सिंह को कश्मीर विजय का उपयुक्त अवसर प्राप्त हुआ। कश्मीर के हितैषी आजम खाँ को अफगान दरबार की लड़ाइयों और संघर्षों में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ।	
उन्होंने जिब्बर खाँ को कार्यवाहक गवर्नर नियुक्त किया। महाराजा रणजीत सिंह ने इस स्थिति का पूरा लाभ उठाते हुए समर दीवान छिंद को 12,000 सैनिकों के साथ कश्मीर विजय के लिए भेजा। उनकी सहायता के लिए खड़क सिंह के नेतृत्व में एक सेना दारा सेना में भेजी गई। महाराजा रणजीत सिंह ने स्वयं भी तीसरी डिवीजन ली।	
वजीराबाद पर अधिकार कर लिया गया। मई माह में दीवान छिंद सांभर पहुंचा और राजौरी, पुंछ तथा पीर पंचल पर अधिकार कर लिया। पीर पंचल से दीवान छिंद की सेना कश्मीर में दाखिल हुई। जिबर खां ने शोपियां (पथान) नामक स्थान पर सिखों के विरुद्ध युद्ध किया। सिख सेना ने 5 जुलाई, 1819 ई. को सिखों पर कब्जा कर लिया और नारी नगर, सेरगढ़ तथा आजमगढ़ को सिख राज्य में शामिल करने की घोषणा कर दी। महाराजा रणजीत सिंह ने कश्मीर पर कब्जा कर लिया। दीवान मोती राम को कश्मीर का गवर्नर नियुक्त किया गया। कश्मीर विजय से महाराजा रणजीत सिंह की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इस विजय से महाराजा को 36 लाख रुपये की वार्षिक आय होने लगी। इस विजय से आर्थिक लाभ तो हुआ, लेकिन अफगानों की शक्ति ने महाराजा रणजीत सिंह को काफी कमजोर भी कर दिया।	
4.महाराजा रणजीत एस	घर के मुखिया की सजावट की स्थिति का वर्णन किया गया है।
उत्तरी पंजाब के उत्तर-पश्चिम में सिंधु नदी के पार स्थित पेशावर अपनी भौगोलिक स्थिति और सैन्य महत्व के कारण एक अत्यंत महत्वपूर्ण शहर था। महाराजा रणजीत सिंह, पेशावर के महत्व को समझते हुए, इसे जीतकर अपने राज्य में मिलाना चाहते थे। 1818 ई. में, काबुल दरबार में चल रहे युद्ध के कारण, उन्हें पेशावर पर आक्रमण करने का अवसर मिला। उन्होंने अकाली फला सिंह और हरि सिंह को 15 युद्धों में पराजित किया।	
महाराजा	
नलवा नहीं है उसने लाहौर से सिखों को पकड़कर उन पर कब्ज़ा कर लिया। उसकी सेना का खटक जनजाति के लोगों ने विरोध किया। लेकिन सिखों ने	

इस प्रकार, युद्ध उन्हें हराने के बाद, उसने खैराबाद और जहाँगीर के शहरों पर अधिकार कर लिया। सिखों को सिखों ने हरा दिया। उन्हें उस समय सिपसावर के शासक यार बिहदानी ने हराया था। वह सिपसावर से भागने में सफल रहा।

के 20 नवंबर को,

, 1818 ई. में महाराजा ने सपसवर पर अधिकार कर लिया। परन्तु महाराजा का सपसवर पर अभी पूर्ण नियंत्रण नहीं था।

उसे अपने अधीन रखना उचित नहीं था। उसने अटक के पूर्व शासक जहाँदाद खॉ से सपसवार नगर का अपहरण करवाया और स्वयं लाहौर पर आक्रमण कर दिया। जब सिख सेना सपसवार से लाहौर की ओर बढ़ी, तो यार बिहामिद का अभियान सपसवार पर अधिकार करने में सफल रहा। इसकी जानकारी होने पर महाराजा ने राजकुमार खड़क सिंह और समर दीवान छिंद के नेतृत्व में 12,000 सैनिकों की एक विशाल सेना सपसवार भेजी। यार बिहामिद ने महाराजा के अधीन होने से इनकार कर दिया। इस अभियान पर आजम खॉ ने आक्रमण किया। जनवरी 1823 में आजम खॉ ने सपसवार पर अधिकार कर लिया। जब महाराजा रणजीत सिंह को इसकी जानकारी हुई, तो उन्होंने

, उस समय कौन शक्तिशाली लोगों का मंत्री बन गया था , यार बिहामिद खान के समुद्र के खूबसूरत किनारे पर

, दीवान स्कार्पा राम , हरि सिंह नलवा और अत्तर सिंह के अधीन

सिखों को माफ़ीनामा भेजा। आजम खान ने सिखों के खिलाफ़ 'जिहाद' का नारा बुलंद किया। 14 मार्च , 1823 ई.: नहीं

इस लड़ाई में अकाली फला सिंह की हार हुई। महाराजा रणजीत सिंह ने हार की खबर सुनी और उन्होंने 1821/2 ई. के 1804 ई. तक 'सिखदेव' की सद्भावना को स्थापित करने के लिए आसपास के इलाकों पर शासन किया। जल्द ही सिखों ने आसपास के इलाकों में विद्रोह कर दिया। 1829 ई. में उसने सपसावर पर हमला कर दिया। महाराजा के अधीन रहने वाले यार बिहारी उसका विरोध नहीं कर सके। जनवरी, 1830 ई. में सिंध दसरिया के युद्ध में हरि सिंह हार गए। जब अहमद वापस लौटे तो उन्हें बालाकोट के युद्ध में शेर सिंह ने हरा दिया

, नहीं मई 1831 ई. स्विच रामकुमार

चीफ ऑफ़ स्टाफ के नेतृत्व में 9,000 सैनिकों की एक सेना सपसावर गाँव भेजी गई। परिणामस्वरूप, 6 मई को , 1834 ई. में, सिखों ने पेशावर को लाहौर राज में मिलाने की घोषणा की। हरि सिंह ने ऐसा ही किया। महाराजा रणजीत सिंह ने पेशावर पर विजय प्राप्त की।

नलवा नहीं है सपसावर का बेदार नियुक्त किया गया। 1834 में बिहामिद खॉ ने दो अभियान सफलतापूर्वक चलाए: साहूजा पराजित हुआ।

उसने सिखों की संपत्ति वापस लेने का फैसला किया। चूंकि हरि सिंह जमरूद चट्टान को नष्ट करने आए थे, इसलिए यार बिहामिद ने अपने बेटे बिहामिद अकबर के नेतृत्व में सिखों के खिलाफ 18,000 सैनिकों की सेना भेजी। दोनों पक्षों में , भीषण युद्ध हुआ। अंततः सिखों की जीत हुई।

5. महाराजा रणजीत सिंह का स्किनर्स पर प्रत्युत्तर - यद्यपि महाराजा रणजीत सिंह और अंग्रेजों के शहर का नाम क्या है और उसका नाम क्या है?

बीच संबंध 1800 ई. तक सुधरे नहीं थे, फिर भी अंग्रेजों के साथ उनके संबंध 1805-06 ई. में शुरू हुए। अगले दो वर्षों में रणजीत सिंह ने तलुज के लोगों पर आक्रमण किया। किन्तु 1809 ई. में महाराजा स्वच्छकार अंग्रेजों के स्थायी शासक बन गए। इसके साथ ही दरसना हिंद का एकीकरण हुआ। इसके साथ ही मालवा के प्रांत अंग्रेजों के संरक्षण में आ गए। इसके साथ ही तलुज

अंग्रेजों और महाराजा रणजीत सिंह स्वच्छकार के बीच संबंधों का वर्णन इस प्रकार है:

*बहती और शिख 1809-1812 ई. आमसम्राट की संधि के कारण महाराजा रणजीत सिंह और साबरमती सरकार के बीच वास्तविक गठबंधन स्थापित नहीं हो सका। अंग्रेजों ने लुधियाना में एक सैन्य चौकी स्थापित कर ली। उन्होंने वहाँ एक राजनीतिक एजेंसी भी स्थापित की। इससे महाराजा रणजीत सिंह के मन में अंग्रेजों के इरादों को लेकर भ्रम पैदा हो गया। इसी बीच, महाराजा रणजीत सिंह ने मोहकम छिंद के नेतृत्व में सफलतापूर्वक के स्कूलों में लोगों का एक समूह इकट्ठा किया। इससे अंग्रेज भी महाराजा के गठबंधन को लेकर असुरक्षित महसूस करने लगे।

*बधानी की बेटी - बधानी में महाराजा रणजीत सिंह की बेटी, तलुज दसरिया से देखी गई। 1821 ई. में, महाराजा रणजीत सिंह ने दा कौर को बंदी बनाकर उसके क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया।

कौर का अधिकार

करसाला, जिसे तलुजों ने देखा था, और जो अंग्रेजों द्वारा संरक्षित था, इसलिए, अंग्रेजों ने

सेना भेजकर महाराजा रणजीत सिंह की सेना को भी वहाँ से खदेड़ दिया गया।अंग्रेजों ने महाराजा रणजीत सिंह की सत्ता को मान्यता नहीं दी।

यह गलत लग रहा है.

*अहललिया की भूमि 1825 ई. में नष्ट कर दी गई। 1825 में, अहलवाली जनजाति, जिनका क्षेत्र तलुज के दोनों ओर था, महाराजा से नदी पार करके तलुज पार कर गई। उन्होंने अंग्रेजों से सुरक्षा मांगी। अंग्रेजों ने उनके क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, जो तलुज से दिखाई देता था। महाराजा रणजीत सिंह को अंग्रेजों का यह कदम पसंद नहीं आया।

* एस सिंध क्षेत्र , पंजाब के पश्चिम में, सिंध नदी के दोनों किनारों पर स्थित एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। सिंध की विजय का निर्णय 1830-31 ई. में हुआ: महाराजा रणजीत सिंह ने सिंध के आसपास के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर ली। लेकिन भारत के गवर्नर जनरल सिंध को पता चला कि अंग्रेजों ने सिंध के सरदारों के साथ व्यापारिक के लिए रोपड़ में उनसे मुलाकात की। गवर्नर जनरल ने कर्नल पोर्टिंगर को सिंध के सरदारों के साथ व्यापार वार्ता के लिए भेजा। जब महाराजा रणजीत ने महाराजा रणजीत सिंह को रोकने समझौते कर लिए हैं, तो उन्हें बहुत दुख हुआ।

के लिए , जो कि 26 अक्टूबर है। , 1831 ई.: स्विच्ड. द रे पा

नहीं

* सस्कर का शासनकाल 1836 ई. - सिंध पर सात सरदारों का संयुक्त शासन। 1834 ई. में, महाराजा रणजीत सिंह ने सस्करपुर के मजारी कबीले के विरुद्ध एक अभियान भेजा, जिन्होंने सिख बस्तियों को लूटा था। 1836 ई. में, महाराजा रणजीत सिंह ने राजकुमार खड़क सिंह के नेतृत्व में मजारी कबीलों के विरुद्ध एक अभियान भेजा।

सेना इसलिए भेजी गई क्योंकि उन्होंने अभी भी सिखों की ज़मीन पर लूटपाट और सिखों की हत्या बंद नहीं की थी। सिख सेना ने माजरिया के इलाके पर कब्जा कर लिया। जब महाराजा रणजीत सिंह सिंधियों की माँगें पूरी करने के लिए खड़क सिंह को फिर से वहीं भेजना चाहते थे, तो गवर्नर-जनरल ऑकलैंड (लॉर्ड ऑकलैंड) ने महाराजा को रोक दिया। इस प्रकार

महाराजा न तो सस्करपुर और न ही वारसाक पर कब्जा किया जा सका। परिणामस्वरूप, महाराजा रणजीत सिंह और अंग्रेज़ बिन्धा चला गया था।

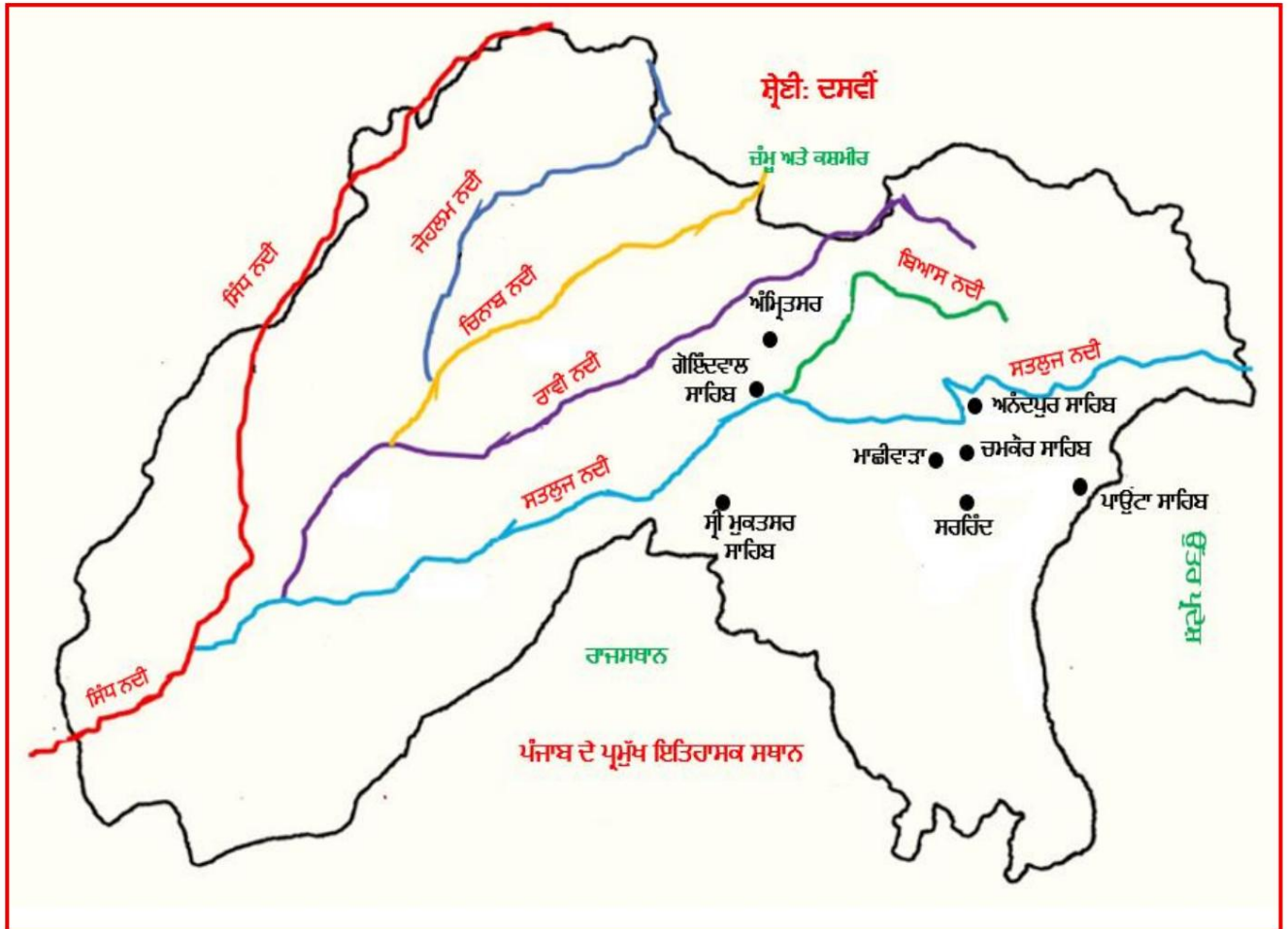
शिरोजिर दा आल- तालुज और सबा के सिंहम के पास स्थित सफ़रोजपुर एक महत्वपूर्ण शहर था। यह किसी को भी अपने ऊपर कब्जा करने की इजाज़त नहीं देता था। जब अंग्रेज़ों को यह पता चल चुका था कि महाराजा रणजीत सिंह के अधीन वे ब्रिटिश

पर अधिकार कर लिया। महाराजा रणजीत सिंह अंग्रेजों की इस कार्रवाई से बेहद नाराज़ थे। उनके दरबारियों ने भी अंग्रेजों की इस कार्रवाई का खुलकर विरोध किया। 1838 ई. में साम्राज्य को नियंत्रित नहीं कर सकते, तो मई, 1835 ई. में अंग्रेजों ने सफ़रोजपुर

अंग्रेजों ने सफ़रोजपुर को एक छावनी बना दिया और वहाँ अपनी सेना तैनात कर दी।

ਨਕਸ਼ਾ ਬੇਕਾਰ ਹੈ.

विश्व के मानचित्र पर सिंध क्षेत्र में पूजा स्थलों को इंगित करें।



योगदान: हर्दसविंदर सिंह (टेट सर और पीएन, मसाज स्वास्थ्य ज्ञान) ए.आई.ई.आर.टी. पंजाब,

रणजीत कौर (ला. इष्ठा) . सैम . . . कल छीना बेट, गुरदापुर और

मनदीप कौर (. ट्रे) ।क्या।। . . दखा लुसधाना.